International Journal of Scientific Research in Modern Science and Technology, ISSN: 2583-7605 (Online)
Vol. 1, Issue 2 [2022] www.ijsrmst.com

शिक्षण के क्षेत्र में ई-लर्निंग की प्रासंगिकता

डॉ. स्वाति प्रिया

सहायक प्राध्यापक, न्यू होराइजन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सिमरिया, टीएमबीयू, भागलपुर (बिहार)

सारांश

ई-लर्निंग का उपयोग शिक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और आवश्यक परिवर्तन की ओर प्रवृत्ति कर रहा है। आजकल की तेजी से बदलती तकनीक ने शिक्षा को भी नई दिशा में ले जाया है। शिक्षण के क्षेत्र में ई-लर्निंग का प्रयोग छात्रों को विभिन्न विषयों में गहरी ज्ञान और समझ प्रदान करने की अनूठी संभावना प्रदान करता है।

ई-लर्निंग की प्रासंगिकता यहाँ तक है कि यह शिक्षकों को नई शिक्षा तकनीकियों और उपायों की ओर प्रवृत्त करता है, जो छात्रों को स्थानीय, राष्ट्रीय, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त हो रहे ज्ञान से जोड़ने में मदद कर सकती है। शिक्षा प्रक्रिया को रोचक और सहज बनाने के लिए ई-लर्निंग उपयुक्त और उच्च-तकनीकी होती है, जिससे छात्रों का अध्ययन गतिशीलता से बढ़ सकता है। इसके साथ ही, ई-लर्निंग शिक्षा को समाज में उच्चतम स्तर पर पहुंचाने में सहायता करती है, खासकर वहाँ तक पहुंचाने में जहाँ पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता और संग्रहण में सुधार की आवश्यकता हो।

शिक्षण के क्षेत्र में ई-लर्निंग की प्रासंगिकता अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल शिक्षा को प्रदान करने की प्रक्रिया को मोदन बनाती है, बल्कि छात्रों को भी उच्चतम शैक्षिक मानकों तक पहुंचाने में मदद करती है, जिससे वह समृद्ध, समाज में समाजशास्त्र में सहायता कर सकते हैं।

मुख्य शब्द: ई-लर्निंग, कंप्यूटर आधारित शिक्षा, डिस्टेंस लर्निंग, टेक्नोलॉजिकल लर्निंग ।

ई-लर्निंग का इतिहास

ई-लर्निंग का इतिहास शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और रुदानी विकास का परिचय देता है। यह शिक्षण की दुनिया में एक नई क्रांति का प्रतीक है, जिसने शिक्षण के प्रयोग में व्यापक परिवर्तन लाया है।

1950-1960s: ई-लर्निंग की शुरुआत हुई थी जब कम्प्यूटर तकनीक का विकास हुआ था। पहले ई-लर्निंग सिर्फ कम्प्यूटर-आधारित पाठ्यक्रमों के रूप में शुरू हुआ था, जो सीधे कंप्यूटर पर आधारित थे।

1970-1980s: इस दशक में, ई-लर्निंग का विकास तेजी से हुआ। कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर की सुधार के साथ, आधुनिक ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म्स विकसित की गई।

1990s: इंटरनेट की पहुंच के साथ, ई-लर्निंग ऑनलाइन प्राप्ति की ओर बढ़ा। ऑनलाइन कोर्सेज, वेबिनार्स, और डिजिटल सामग्री के विकास से लोग घर बैठे विभिन्न विषयों में पढ़ाई कर सकने लगे।

2000s-2010s: मोबाइल तकनीक की विकसित होने से लोग ई-लर्निंग को अपने स्मार्टफ़ोन और टैबलेट पर भी एक्सेस करने लगे। यह दशक ई-लर्निंग के लिए वास्तविक विकास का दशक था, जिसमें लाखों लोग ऑनलाइन कोर्सेज और वेबिनार्स का उपयोग करने लगे।

2020s: पांडेमिक के दौरान, ई-लर्निंग का उपयोग और भी बढ़ा। स्कूल, कॉलेज, और व्यापारिक प्रशासन में ई-लर्निंग की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी। यह साबित करता है कि ई-लर्निंग ने आज की तकनीकी युग में शिक्षा की दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस रूप में, ई-लर्निंग ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति का आदान-प्रदान किया है, जो छात्रों को एक नई और विश्वसनीय शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

ई-शिक्षा के प्रकार

ई-शिक्षा के प्रकार दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित की जा सकती है- सिंक्रोनस (Synchronous) और असिंक्रोनस (Asynchronous) शिक्षा।

1. सिंक्रोनस (Synchronous) ई-शिक्षा:

- सिंक्रोनस ई-शिक्षा में, शिक्षा प्रोसेस लाइव और वास्तविक समय में होती है।
- इसमें शिक्षा प्रदाता और शिक्षा प्राप्त करने वाले स्थानीय या ग्लोबल नेटवर्क के माध्यम से आपस में जुड़ते हैं।
- यह व्यक्तिगत प्रश्नोत्तरी, वेबिनार्स, लाइव वीडियो क्लासेस, चैट रुम्स या ऑनलाइन वीडियो कॉल्स के माध्यम से हो सकती है।

2. असिंक्रोनस (Asynchronous) ई-शिक्षा:

- असिंक्रोनस ई-शिक्षा में, शिक्षा संदेश या संसाधनों को ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर अपलोड किया जाता है, और छात्र अपने समय में उन्हें पहचान सकते हैं।

- यह टेक्स्ट, वीडियो, ऑडियो, जीपीटी, फ़ोरम डिस्कशन, ईमेल या ऑनलाइन क्विज़ के रूप में हो सकती है।
- छात्र समय के अनुसार स्वतंत्रता से पढ़ाई कर सकते हैं और उन्हें विभिन्न संसाधनों का पहुँचने का समय मिलता है।

इस प्रकार, सिंक्रोनस ई-शिक्षा लाइव और इंटरएक्टिव होती है, जबकि असिंक्रोनस ई-शिक्षा अनुप्रयुक्त समय में पढ़ाई करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

भारत में ई-शिक्षा की स्थिति

भारत में ई-शिक्षा की स्थिति को विवेचना करते समय, निम्न पॉइंट्स सामने आते हैं:

1. **इंटरनेट कनेक्टिविटी:** भारत में ई-शिक्षा की प्रमुख चुनौती यह है कि इंटरनेट कनेक्टिविटी न केवल शहरों में अच्छी हो, बल्कि गाँवों और दूरगाँवों में भी सुरेख हो। इससे गरीबी के क्षेत्रों में ई-शिक्षा का पहुंचना सम्भावनाओं की सीमा में रह सकता है।
2. **उपकरण और प्रौद्योगिकी:** स्मार्टफ़ोन्स, लैपटॉप्स, टैबलेट्स, इत्यादि की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण है। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले छात्रों के पास इस प्रकार की उपकरणों की कमी हो सकती है।
3. **भाषा की अनुपस्थिति:** भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, और अधिकांश ई-शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म्स मुख्यत: अंग्रेजी में होती हैं। इसके कारण, जिन लोगों को इंग्लिश में कमजोरी है, उनके लिए शिक्षा की प्राप्ति में कठिनाई हो सकती है।
4. **शिक्षा की गुणवत्ता और प्रशासनिक संरचना:** ई-शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर संदेह भी एक पॉइंट है। साथ ही, शिक्षा की प्रदान की प्रक्रिया, शिक्षा प्रदाताओं की तत्परता, और छात्रों के लिए सहायता की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण हैं।
5. **शिक्षा का सामाजिक और आर्थिक परिणाम:** ई-शिक्षा के आमलन में यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि कैसे यह सामाजिक और आर्थिक परिणामों को प्रभावित कर सकती है। क्या यह समाज में शिक्षा की सामाजिक न्यायता को बढ़ावा दे रही है, या फिर शिक्षा के आर्थिक बंटवारे की वृद्धि कर रही है।

इन पॉइंट्स को ध्यान में रखते हुए, भारत में ई-शिक्षा को सुधारने के लिए सरकारी नीतियों और योजनाओं का विकास किया जा रहा है ताकि ज्यादा लोग इसका लाभ उठा सकें और शिक्षा के क्षेत्र में समानता बनी रहे।

ई-शिक्षा बढ़ाने हेतु सरकार के प्रयास

भारत सरकार ने ई-शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई प्रमुख पहलुओं पर काम किया है और विभिन्न उपायों को शुरू किया है।

1. स्वयं (SWAYAM): स्वयं एक राष्ट्रीय ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म है जो उच्च शिक्षा, स्कूल और उद्योग के क्षेत्र में कई मुख्य कोर्सेज प्रदान करता है। यह कोर्सेज ऑनलाइन होते हैं और लाखों छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।
2. स्वयं प्रभा (SWAYAM Prabha): स्वयं प्रभा एक डिजिटल टेलीविजन चैनल है जो शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है। यह चैनल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए विशेषत: ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचाने का प्रयास करता है।
3. राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (National Digital Library): यह एक व्यापक ऑनलाइन लाइब्रेरी है जो विभिन्न विषयों में लाखों पुस्तकें, जर्नल्स, अनुसंधान पत्रिकाएँ, शोध पेपर्स, और अन्य शिक्षा संबंधित सामग्रियाँ प्रदान करती है।
4. स्पोकन ट्यूटोरियल (Spoken Tutorial): यह पहल भारत में ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके विभिन्न विषयों में शिक्षा प्रदान करने की है, और यह अधिकतर भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है।
5. शिक्षा के लिए नि:शुल्क और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर (Free and Open Source Software for Education): यह पहल शिक्षा के क्षेत्र में नि:शुल्क और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर की उपयोगिता को प्रमोट करने के लिए है, जिससे छात्रों और शिक्षा प्रदाताओं को कम लागत में तकनीकी शिक्षा प्रदान की जा सकती है।
6. वर्चुअल लैब (Virtual Lab): यह पहल विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में वर्चुअल लैब की सामग्रियाँ प्रदान करता है, जिससे छात्र विज्ञानिक प्रयोगों को वर्चुअल माध्यम से सीख सकते हैं।
7. ई-यंत्र (e-Yantra): यह पहल रोबोटिक्स और ऑटोमेशन के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करने के लिए है, जिससे तकनीकी ज्ञान और कौशल में वृद्धि की जा सकती है

ई-लर्निंग की शिक्षा के क्षेत्र में प्रासंगिकता

ई-लर्निंग की शिक्षा के क्षेत्र में प्रासंगिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। ई-लर्निंग प्रक्रिया है जिसमें तकनीकी साधनों का उपयोग कर शिक्षा की प्राप्ति होती है, और इसकी प्रासंगिकता शिक्षा के प्रति आवश्यक और संवेदनशील द्रष्टिकोण को संकेत करती है।

प्रासंगिकता का मतलब है कि शिक्षा की प्रणालियों, पाठ्यक्रमों और सामग्रियों को छात्रों की जरुरतों और संकेतों के अनुसार अनुकूलित किया जाए। ई-लर्निंग के माध्यम से यह संभव है क्योंकि इसमें छात्रों को समकालीन, व्यक्तिगत, और जगह-निष्ठ पाठ्यक्रम मिलते हैं।

ई-लर्निंग की प्रासंगिकता का एक और महत्वपूर्ण पहलु उसकी उपयोगिता में भी दिखाई देता है। यह उच्च शिक्षा, व्यावासिक संस्थानों, सरकारी संस्थानों, और ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी है। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए ई-लर्निंग का प्रयोग किया जा रहा है। यह उन लोगों को भी शिक्षा के लाभ में सम्मिलित कर रहा है जो गुरुकुल पद्धति के अलावा किसी भी प्रशासनिक संकोषण से दूर रहते हैं।

ई-लर्निंग की शिक्षा प्रासंगिक बनाने में शिक्षा प्रदाताओं, निर्माताओं और सरकारी निकायों का सामर्थ्य भी महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि शिक्षा के सभी प्रमुख क्षेत्रों में सही तकनीकी विकास हो और शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए उच्च मानकों का पालन किया जा रहा है। इस प्रकार, ई-लर्निंग की शिक्षा के क्षेत्र में प्रासंगिकता शिक्षा की सामग्रियों को छात्रों के लिए पहुंचाने में सहायता करती है, जिससे उन्हें समृद्ध और विकसीत शिक्षा का अवसर मिलता है।

यह शिक्षक की पाठ- प्रस्तुतीकरण को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है।

1. ई-लर्निंग द्वारा पूर्ण व्यवसायिक प्रक्रिया द्वारा शिक्षण कार्य को उद्देश्य केंद्रीय बनाने में तथा प्रभावी निर्देशन प्रक्रिया में सहायता प्राप्त कर सकता है।
2. इस तकनीकी से शिक्षक अंतरराष्ट्रीय,राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली घटनाओं, नवीन तत्वों का ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थियों को उचित रूप से प्रभावी शिक्षण करा सकता है ।
3. ई - लर्निंग शिक्षक को अपनी योजना बनाने, अवलोकन करने,मूल्यांकन करने आदि के पर्याप्त अवसर एवं तरीके उपलब्ध कराता है।

4. यह व्यक्तिगत स्तर पर भी शिक्षक को शिक्षण अधिगम संबंधी उद्दीपन तथा अनुक्रिया प्रदान करके अपने शिक्षण में गुणात्मक योग्यता का विकास कर सकता है।
5. ई- लर्निंग द्वारा शिक्षक को नवीन ज्ञान, तकनीकी द्वारा शिक्षण को प्रभावी बनाने के समान अवसर प्रदान करता है।
6. ई -लर्निंग द्वारा शिक्षक समय एवं संसाधनों की कमी को दूर करते हुए एक साथ अधिक छात्रों से अंताक्रिया कर सकता है। जिससे शिक्षक की व्यवसायिकता में वृद्धि होती है।
7. छात्रों तक विषय सामग्री का ज्ञान पहुंचाने के माध्यमों, पाठ्यक्रमों में यह शिक्षक की अत्यधिक सहायता कर सकता है।
8. ई -लर्निंग द्वारा शिक्षक अपने व्यवसाय कुशलता को विकसित कर सकता है। कुछ समय पहले कोरोना महामारी (कोविड-19) के कारण विश्व की शिक्षा व्यवस्था नकारात्मक रूप से प्रभावित हुई । विद्यालय, महाविद्यालय एवं अन्य शैक्षिक संस्थानों में अवकाश घोषित कर दिया गया था। इस परिस्थिति में ई- लर्निंग शिक्षण का एक प्रभावी साधन बनकर उभरा है। जो शिक्षा व्यवस्था को गति प्रदान कर रहा है ।

निषकर्ष

" शिक्षण के क्षेत्र में ई-लर्निंग की प्रासंगिकता" का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट है कि आज के युग में तकनीकी उन्नति और इंटरनेट के प्रयोग से ई-लर्निंग शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। शिक्षकों के लिए ई-लर्निंग की प्रासंगिकता का मतलब है कि वह नवीनतम तकनीकों का सही तरीके से प्रयोग करके छात्रों को शिक्षा प्रदान कर सकते हैं और उन्हें उच्चतम गुणवत्ता की शिक्षा मिल सके।

ई-लर्निंग की प्रासंगिकता का पहला महत्व यह है कि यह शिक्षकों को अद्वितीय पाठ्यक्रम और सामग्रियों की पहुंच प्रदान करता है। इंटरनेट पर उपलब्ध विशेषज्ञता, शिक्षा के लिए उच्चतम गुणवत्ता की विभाजना और शिक्षा के लिए विशेषज्ञता के लिए सामग्रियों की विकल्प सहित विभिन्न संसाधनों का उपयोग करने की अनुमति देता है। पारंपरिक शिक्षा संगठनों के साथ सामर्थ्य प्रदान करने का है। ई-लर्निंग के माध्यम से, शिक्षक छात्रों को उनकी विशेष जरूरतों के अनुसार पढ़ाई प्रदान कर सकते हैं, साथ ही समय की बचत करके अधिक छात्रों को सीधे संपर्क में ले सकते हैं। ई-लर्निंग शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में नवीनतम विकासों और प्रौद्योगिकियों के साथ अपडेट रहने की स्थिति में रखता है। इससे वह अपनी शिक्षण

प्रणालियों को और भी सुधार सकते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में नवीनतम विचारों और अनुसंधानों के साथ परिचित हो सकते हैं।

" शिक्षण के क्षेत्र में ई-लर्निंग की प्रासंगिकता" शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की ओर ले जाने की दिशा में गति दे रहा है। इसका प्रभाव शिक्षा के स्तर को ऊँचा करके शिक्षा की गुणवत्ता को मजबूती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिससे हमारे शिक्षा प्रणाली को विकसित करने में मदद मिल रही है और हम एक बेहतर शिक्षा प्रणाली की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. https://www.learndash.com/3types-of-elearning/

[2]. www.drishtiias.com

[3]. शर्मा,आर. ए. (2016) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया: आर.लाल बुक डिपो मेरठ ।

[4]. मिश्र.डॉ.आत्मानंद,गौतम कालीचरण एवं कुमार राकेश (1998), शिक्षा कोष : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

[5]. https://www.Infosrb.com.

[6]. नेहरू,डॉ.आर. एस.एस.(2013): essentials of-elearning: ए. पी. एच.पब्लिकेशन कारपोरेशन, नई दिल्ली।

[7]. https://hi.m.wikipedia.org.wiki.

[8]. Https://shodhganga.Inflibenet-ac.in/simple-search.

[9]. विविध समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं |